



भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ -226 101 (भारत)
ICAR-Central Institute for Subtropical Horticulture
Rehmankhura, PO Kakori, Lucknow-226 101, U.P. (India)
Telephone : (O): +91-522-2841022, 24; Fax: + 91-522-2841025
Web Site : www.cish.icar.gov.in, E-mail: cish@icar.gov.in



दिनांक 21.10.2025 से 27.10.2025

मौसम पूर्वानुमान आधारित परामर्श Weather forecast based advisory

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (<http://www.imd.gov.in>), भारत सरकार के अनुसार इस सप्ताह सुबह की धुंध के बाद मौसम साफ रहने की सम्भावना व्यक्त की गई है। अधिकतम तापमान लगभग 34°से. तथा न्यूनतम 18°से. के मध्य रहने की संभावना है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मौसम साफ रहने की सम्भावना है, और अधिकतम तापमान लगभग 33°से. तथा न्यूनतम 20°से. के मध्य रहने की संभावना है। वर्तमान सप्ताह के मौसम और फसल की अवस्था के अनुसार किसानों को निम्न लिखित सलाह दी जाती है। IMD weather forecasting services, Government of India (<http://www.imd.gov.in>), have predicted clear sky after morning mist during the week; and maximum and minimum temperatures between 34°C and 18°C in and around Lucknow. In western UP also, clear sky has been predicted, and maximum and minimum temperatures may range between 33°C and 20°C there. Farmers are advised to take following actions in light of weather forecast and crop phenology for the ensuing week.

विभिन्न विषयों पर जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट cish.icar.gov.in पर ई-प्रकाशन देखें।
Please visit E-publications on our Website - cish.icar.gov.in for information on various subjects.

आम के पुराने बागों में क्षत्रक प्रबंधन Canopy management in old mango orchards

मध्य आयु और पुराने आम के बागों दोनों में आम के पेड़ के क्षत्रक प्रबंधन करने का समय आ गया है। आम के जंगलों में घने उगने वाले ऊँचे पेड़ों और आम के पुराने बागों में फलों की कम पैदावार होना बहुत आम है। पेड़ जो आकार में अधिक हो गए हैं, एक-दूसरे को पार करने वाली शाखाओं के साथ घने हो गए हैं, जिससे थोड़ी सी धूप ही क्षत्रक के अंदर घुस पाती है और केवल बाहरी परिधि तक ही सीमित रह जाती है। ऐसे बाग कायाकल्प के लिए आदर्श होते हैं। It is time to manage mango tree canopies in both mid age and old mango orchards. It is very common to see mango forests with



densely growing tall trees and poor fruit yields in mango growing belts. Trees which have grown over-size become dense with branches crossing each other, allowing little sunlight to penetrate inside the canopy and fruiting limited only to the outer periphery. Such orchards are ideal for rejuvenation.

आम के बागों में छत्र मध्य काट छांट (सेंटर ओपेनिंग) Centre opening in mid age mango orchards

मध्यम आयु वर्ग के आम के बागों, यानी 15-30 वर्ष की आयु के बागों, जिनकी उत्पादन क्षमता तो सामान्य है लेकिन शाखाएं बगल के वृक्षों से मिलने लगी हैं, के लिए केंद्र खोलने की सिफारिश की जाती है। सेंटर ओपनिंग से तात्पर्य पेड़ की एक या दो केंद्रीय रूप से स्थित शाखाओं को कम करने या काटने से है, ताकि प्रकाश के प्रवेश को बेहतर बनाने के लिए पेड़ के मध्य भाग को खोला जा सके। इससे अधिक उपज, बेहतर फल आकार और फलों की गुणवत्ता में सुधार होता है। Centre opening



is recommended for mid age mango orchards, i.e. orchards of 15-30 years of age, where branches of adjacent trees have started touching/ intermingling with each other. Centre opening refers to thinning out or cutting of one or two centrally located branches of tree with a view to opening the central portion of tree to improve light penetration. It results in higher yields, improved fruit size and fruit quality.

इस कार्य हेतु वृक्षों का निरीक्षण कर के हर वृक्ष में उन एक या दो शाखाओं या शाखाओं के कुछ अंश को चिह्नित करते हैं जो छत्र के मध्य में स्थित हों तथा वृक्ष की ऊँचाई के लिए सीधी तौर पर जिम्मेदार हों। इन चिह्नित शाखाओं या उनके अंश को उत्पत्ति के स्थान से ही काट कर हटा देना चाहिए। कटाई का कार्य यदि बिजली या पेट्रोल से चलने वाली आरी से किया जाता है तो कार्य आसान हो जाता है तथा कटे हुए स्थान पर छाल नहीं फटती है। इस प्रकार छत्र प्रबन्धन करने के बाद इसका लाभ बागवान को प्रथम वर्ष से ही मिलने लगता है। ऐसा करने से बागवान को कई लाभ होते हैं। वृक्ष की ऊँचाई कम हो जाती है। वृक्ष के छत्र के मध्य भाग में सूर्य के प्रकाश की उपलब्धता बढ़ जाती है परिणाम स्वरूप फलों की गुणवत्ता बढ़ती है। हवा का आवागमन बढ़ जाता है। नये कल्ले आते हैं और उचित प्रकाश के कारण कल्लों में परिपक्वता आती है। ऐसे वृक्षों में कीट-व्याधियों का प्रकोप भी कम होता है एवं रसायनों का छिड़काव भी अधिक प्रभावी होता है।

जीर्णोद्धार की नवीनतम तकनीक Refined Mango Rejuvenation Technology

जैसा कि हम जानते हैं कि व्यापक स्तर पर पुराने एवं अनुत्पादक बागों को समूल निकाल कर नए बाग स्थापित करना एक खर्चीला विकल्प है। हाल के वर्षों में संस्थान द्वारा विकसित जीर्णोद्धार तकनीक, जिसमें सभी शाखाओं को एक साथ काटकर कल्लों को प्रोत्साहित करते हुए, आम के पुराने बागों को उत्पादक बनाते हुए आम के फलों में गुणवत्ता एवं उत्पादकता में वृद्धि की जाती रही है। लेकिन इस तकनीक के प्रयोग में सबसे बड़ी बाधा तना बेधक कीट के प्रबंधन की रही है। इस समस्या को ध्यान में रखते हुए हाल के वर्षों में किये शोध से यह ज्ञात हुआ है कि जीर्णोद्धार की पुरानी विधि की अपेक्षा नयी संशोधित तकनीक अपनानी चाहिये। इस विधि में दिसम्बर-जनवरी के महीने में सभी मुख्य शाखाओं को एक साथ काटने के बजाय सर्व प्रथम अगर कोई एक मुख्य शाखा हो जोकि सीधा ऊपर की तरफ जाकर प्रकाश के मार्ग में बाधा बन रही हो तो उसको उसके उत्पत्ति बिंदु से ही निकाल देना चाहिए। इसके बाद पूरे वृक्ष में 4-6 अच्छी तरह से चारों ओर फैली हुई शाखाओं का चयन करना चाहिये। इनमें से मध्य में परस्पर विपरीत स्थित दो शाखाओं को पहले वर्ष में, फिर अगले वर्ष परस्पर विपरीत स्थित अन्य दो शाखाओं को द्वितीय वर्ष में और शेष को जो कि सबसे बाहर की तरफ स्थित हों उन्हें तृतीय वर्ष में टूट छोड़ते हुए काटना चाहिये जिससे नये कल्लों की वृद्धि को प्रोत्साहित किया जा सके। इसके साथ ही जो शाखायें बहुत नीचे और अनुत्पादक या कीट बीमारियों से ग्रस्त हों उन्हें भी निकाल देना चाहिये। कटे हुए स्थान पर बोर्डोपेस्ट (कॉपर सल्फेट, चूना और पानी -1:1:10) और 250 मिली अलसी या नीम का तेल मिलाकर कटे हुए स्थान पर लेप करना चाहिए। बोर्डोपेस्ट की जगह देशी गाय के ताजे गोबर का भी लेप किया जा सकता है। इस प्रकार काटने से शुरु के प्रथम और द्वितीय वर्षों में बाकी बची शाखाओं से भी 50 से 150 किग्रा प्रति वृक्ष तक फल प्राप्त हो जाते हैं और लगभग तीन वर्षों में हमारे वृक्ष पुनः छोटा आकार लेकर फलत प्रारम्भ कर देते हैं।



If yield records of relatively old mango orchards (>40 years) are poor over the last five years besides best management practices, rejuvenation becomes necessary. The best time to do this operation in

mango trees is December - January. For rejuvenation, the centrally located upright growing branch of the tree, if present, is removed from the point of its origin without leaving any portion of it. Three to five wide-angle primary branches well distributed on different sides are selected for the development of the canopy in the years to come. All other branches growing very low in height and interfering with the cultural operations or intermingling with the selected branches are also removed from the point of their origin. Out of 3-5 selected primary branches, two branches growing opposite to each other and located on the top are headed back, leaving a stump of 1.0-1.5 m for secondary branch regeneration. All of the remaining selected branches will be maintained for fruiting. The next two branches head back in a similar fashion, leaving the stump behind them in the second year. The remaining branches are headed back in the third year. The cut portions will be smeared with a fungicidal paste/Bordeaux paste/fresh cow-dung which facilitates the healing of cut portions without any further infection. Thinning of excessive shoots arising from cut stumps is done during April and June to allow only 5-8 healthy shoots per branch, growing in the proper direction, for ideal canopy development. Monitoring and management of stem borer, leaf diseases and leaf eating insects is a must for success. The trees are well fed with recommended doses of manure, fertilizers and proper moisture should be maintained in soil. In general, new shoots start fruiting in the third year.

पत्तियों के एंथ्रेकनोज रोग की रोकथाम हेतु सलाह Advisory for management of leaf anthracnose



आम का पत्ती एन्थ्रेकनोज बारिश के मौसम के बाद में उत्पन्न हो रही नयी पत्तियों को काफी नुकसान पहुंचाता है। इस रोग का प्रकोप वायु में 80 प्रतिशत से अधिक आर्द्रता, अधिक ओस होने पर अथवा वर्षा होने पर अधिक होता है तथा गंभीर आर्थिक क्षति होती है। ऐसी स्थिति में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यू.पी. @ 3 ग्राम प्रति लीटर या मेन्कोजेब + कार्बेन्डाजिम के 0.2 प्रतिशत घोल (2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी) या ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन + टेबूकोनाजोल (25 + 50 प्रतिशत) 0.05 प्रतिशत घोल (0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए। Leaf anthracnose of mango causes significant losses to new flushes after rainy season. High relative humidity (80%), heavy dew and rain favour rapid disease development. If emergence of new flushes is observed in orchards, management efforts should be made. Disease can be managed by the spray of Copper oxychloride 50WP @ 3g per litre of water or Carbendazim 12 + mancozeb 63 WP @ 2 g per litre of water or Trifloxystrobin + Tebuconazole (25+50%) @ 0.5 g per litre of water as a precautionary measure or on appearance of first symptoms.

उल्टा सूखा रोग की रोकथाम हेतु सलाह Advisory for management of dieback/ twig drying

मरने और टहनी के सूखने/झुलसने के लक्षण ज्यादातर बारिश के दौरान और उसके बाद में दिखाई देते हैं। टहनियों का सिरे से नीचे की ओर सूखना उल्टा सूखा रोग का विशिष्ट लक्षण है। कभी-कभी, छाल से गोंद निकलने के साथ टहनियाँ सूख जाती हैं। संक्रमित टहनियों की पत्तियाँ सूख जाती हैं और टहनियों के आंतरिक ऊतक भूरे रंग के हो जाते हैं। मानसून के बाद की अवधि के दौरान बागों में ऐसे लक्षण देखे जाते हैं। Symptoms of dieback and twig drying/blight mostly appear during and after rains. Drying of twigs from tip to downward is the typical symptom of mango dieback disease. Sometimes, twigs may dry with gummosis from bark. Leaves of infected twigs become dry and internal tissue of the twigs become brownish. Such symptoms are mostly seen in orchards during post monsoon period.



प्रबंधन Management: संक्रमित टहनियों को सूखे भाग से करीब 10–20 सें.मी. नीचे से काटने के बाद मोटी डालियों पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के 0.5 प्रतिशत (5.0 ग्रा. प्रति ली.) के घोल से पुताई और कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव प्रभावशाली होता है। Pruning of infected twigs approximately 10-20 cm below dried portion, followed by cut ends pasting with copper oxychloride @ 5.0% and /or spray of copper oxychloride 50WP @ 0.3% (i.e. 3.0 g per litre of water).

आम के तना भेदक कीट के प्रबंधन हेतु सलाह Advisory for management of mango stem/trunk borer

आम का तना भेदक (बैटोसेरा रूफोमैकुलेटा) पूरे देश में आम के बागों में खतरे के रूप में निरन्तर बढ़ता जा रहा है। यह कीट उत्तर प्रदेश के आम उत्पादक क्षेत्रों के वृक्षों में व्यापक रूप से उपस्थित है। इस कीट का प्रकोप मलिहाबाद क्षेत्र में भी व्यापक रूप में पाया गया है। प्रभावित वृक्षों में धीरे-धीरे पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं तथा कीटों से प्रभावित शाखाएँ सूखने लगती हैं। गंभीर प्रकोप होने पर वृक्ष मर सकता है। The mango trunk borer (*Batocera rufomaculata*) is increasingly becoming a menace in mango orchards across the country. The insect pest is widely distributed in the mango growing belts including Uttar Pradesh. Affected trees gradually lose their vigor, manifest drying of branches and in severe cases death ensues.



Stem borer grub infestation symptom

Management

- बागों को साफ—सुथरा रखना चाहिये तथा संस्तुत कृषि तकनीकियों का उपयोग करना चाहिये। Keep the orchards clean and follow recommended agro-techniques.
- लोहे के तार/हुक से प्रभावित छिद्रों से कीटों को यांत्रिक रूप से हटाना चाहिये। छिद्रों को साफ कर तथा क्लोरपायरीफॉस 2.0 मि.ली./लीटर के घोल से रूई के फाहे को भिंगो कर छिद्र में डाल कर छिद्र को मिट्टी के लेप से बन्द कर दें, जिससे रसायन की गैस प्रभावी हो सके। Mechanically remove the grubs from the infected trunk holes by using iron wire / hook, clean the hole, insert cotton wick soaked in a solution of chlorpyrifos @ 2 ml/litre and close the holes with mud plaster.

जाला कीट के प्रबंधन हेतु सलाह Advisory for management of leaf webber



आम का जाला कीट, उत्तर भारत के अधिकांश आम उत्पादक क्षेत्रों में, एक गम्भीर समस्या बन चुका है। इसका प्रकोप विशेष रूप से घने बागों में अधिक होता है। अभी इसका प्रकोप यदाकदा ही है लेकिन यदि प्रकोप दिखे तो पत्तों को इससे बचाने हेतु उचित समय पर प्रबंधन आवश्यक है। Mango leaf webber has become a serious pest of mango in northern India. Densely planted orchards have higher infestation than the normal spaced and canopy managed orchards. Incidence of this pest is rare at present, however, if it is there, timely management of this insect is crucial to save the mango foliage.

प्रबंधन Management: जालों को जाला तोड़क यंत्र से तोड़कर अवशेषों को जला दें। पेड़ों पर लेम्बडासायहलोथ्रिन 5 ई.सी. 1 मिली प्रति ली. पानी का छिड़काव करें। Removal of leaf webs by leaf web removing device and burning of webs. Spray of lambdacyhalothrin 5 EC @ 1 ml / litre of water.

आम के सेमीलूपर कीट की रोकथाम हेतु सलाह Advisory for management of mango semilooper

सेमीलूपर या काला इंच कीड़ा आम के लिए एक गंभीर खतरे के रूप में उभरा है। क्योंकि इसका लार्वा प्रारंभिक अवस्था में युवा पत्तियों को खराब कर देता है और बाद के चरणों में परिपक्व फल पर छिलके को खुरच कर और फलों के डंठल को काटने से हानि करता है। इसके प्रभावी प्रबंधन के लिए लैमडासायहलोथ्रिन 5 ई.सी. / 1 मि.ली. / लीटर पानी का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। Semilooper or black inch worm has emerged as a serious threat to mango due to larvae defoliates the young leaves in the early stages and in later stages grown up looper attacks on the matured fruit by scraping the epicarp and cutting of fruit peduncle leads to drop off. Spray with Lamdacyhalothrin 5% EC @ 1 ml/litre of water is recommended for its effective management.



आम के उकठा रोग के प्रबंधन हेतु सलाह Advisory for management of mango wilt

फफूँदी द्वारा उत्पन्न उकठा रोग का प्रथम लक्षण पत्तियों के मुड़ाने के रूप में प्रकट होता है और एक से दो माह में पेड़ की सारी पत्तियाँ सूख जाती हैं। इस रोग से मरते हुए पेड़ों के मुख्य तने और शाखाओं पर गोंद का रिसाव होता है। इस रोग के नियंत्रण हेतु आम की जड़ों को कटने से बचाया जाना चाहिए, उकठा ग्रस्त और संक्रमण प्रभावित पेड़ों के आस पास की जड़ क्षेत्र की मृदा में थायोफेनेट मिथाइल के 50-400 ग्राम के घोल को इतने पानी के साथ प्रयोग करें कि वह 1.0 से 1.5 मीटर गहराई तक पहुंच जाए।



The symptoms of mango wilt appear in the form of wilting of leaves and within 1-2 months period and whole tree becomes wilted. Severe oozing of gum is commonly seen in wilted trees. Disease can be managed by avoiding damage to mango roots and treatment of the root zone of wilted and infected trees with thiophanate methyl 70WP @ 50-400 g per tree with sufficient water to wet root zone upto 1.0-1.5 m depth according to the age and vigour of the tree.

अमरुद का छाल खाने वाला कीट का प्रबंधन हेतु सलाह

Advisory for management of guava bark eating caterpillar

छाल खाने वाला इल्ली अमरुद का प्रमुख कीट है। इस कीट की उपस्थिति शाखाओं पर लम्बाई में टेढ़े मेढ़े फीते जैसे जाले और तने पर गैलरी देख कर सुनिश्चित की जा सकती है। जाला हटाने पर अक्सर तने में छोटे-छोटे छेद दिखाई देते हैं जिनके अन्दर इस कीट की सूंड़ी रहती है और तने को क्षति करती है। अधिक संख्या में कीटों के प्रकोप से प्रभावित शाखा की भोजन आपूर्ति बाधित हो जाती है और यह सूखकर मर जाती है। इस कीट का प्रकोप दिसम्बर से मार्च माह के मध्य अधिक होता है। सूंड़ी का आकार 4 से.मी. तक होता है और इसका रंग भूरा होता है।



Bark eating caterpillar is an important pest of Guava. Its occurrence could be noticed by the presence of elongated zigzag ribbon-like messy web or galleries made by fragments of bark pieces & excreta with silk, near the fork or angles of the stem or branches. If you remove the web, you can see a small bore hole in the angle of the thick branches and may find the larva inside. The larva feed on the bark and inside it breaks the vessels of nutrition. In case of severe attack the tree dies as the sap movement blocked. Life cycle is annual with one generation per year. The incidence will be high during December to March. The fully grown larva is about 4 cm long with pale brown to brown, smooth skinned with hard patches on the segments.

प्रबंधन Management

1. अधिक सघन बागवानी से बचें और बाग में सफाई रखें। Keeping orchard clean and avoiding overcrowding of trees will help to minimize the attack of pest.
2. कीट की उपस्थिति देखने पर छेद के अन्दर उपस्थित कीट को मारें। Probing the galleries and inserting an iron spike in to the bore hole to kill the larva.

अमरुद के उकठा/क्षय रोग के प्रबंधन हेतु सलाह Advisory for management of guava wilt/ decline

यह रोग जड़ ग्रन्थि सूत्रकृमि और फफूंद द्वारा उत्पन्न होता है। सक्रमित पेड़ भले ही जीवित बने रहें लेकिन इनकी उत्पादकता बहुत कम होती है। इस रोग के नियंत्रण हेतु पौधों के थाले की मिट्टी में प्रति वर्ग मीटर 200 ग्राम नीम की खली या 500 ग्राम वर्मी कम्पोस्ट के साथ जैविक जीव नाशी (*ट्राइकोडर्मा हारजियानम* या *टी. विरीडी* या *बेसिलस प्रजाति* या *स्यूडोमोनास प्रजाति*) 25 ग्राम मिट्टी में मिलाना चाहिए। बाग में सूत्रकृमि ग्राही अन्य फसलें नहीं उगानी चाहिए।



The guava wilt/ decline are caused by root-knot nematode and fungus. The affected plants become unproductive. Disease can be managed by soil application of *Trichoderma harzianum* or *T. viride* or *Pseudomonas* spp. or *Bacillus* spp. (25 g/m²) alone or in combination with neem cake (200 g/m²) or vermi compost (500 g/m²). Root-knot nematode susceptible crops should not be grown in orchards.



तुड़ाई उपरांत फलों का प्रबंधन Post harvest management of fruits

आम जनता द्वारा उपयोग के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एस.एच. द्वारा विकसित एंड्रॉइड ऐप्स के गुगल प्ले लिंक/यू.आर.एल. की सूची List of Google Play links/URLs of android apps developed by ICAR-CISH for use by general public

कच्चे आम के उत्पाद (हिन्दी) Raw mango products (Hindi):

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.AamKeUtpaad_New&hl=en

कच्चे आम के उत्पाद (अंग्रेजी) Raw mango products (English):

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.Raw_Mango_Product_English&hl=en

पके आम के उत्पाद (हिन्दी) Ripe mango products (Hindi):

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.Pake_Aam_Ke_Utpaad&hl=en

पके आम के उत्पाद (अंग्रेजी) Ripe mango products (English):

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.Ripe_Mango_Products_English&hl=en

अमरुद की रसोई व्यंजन विधि (हिन्दी) Guava Kitchen Recipes (Hindi) :

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.GuavaProcessedProducts_Hindi&hl=en

अमरुद प्रसंस्कृत उत्पाद (अंग्रेजी) Guava Processed Products (English) :

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.GuavaProcessedProducts_English&hl=en

आंवला के उत्पाद (अंग्रेजी) Aonla Products(in English)

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.Aonla_Processed_Products_English&hl=en&gl=US

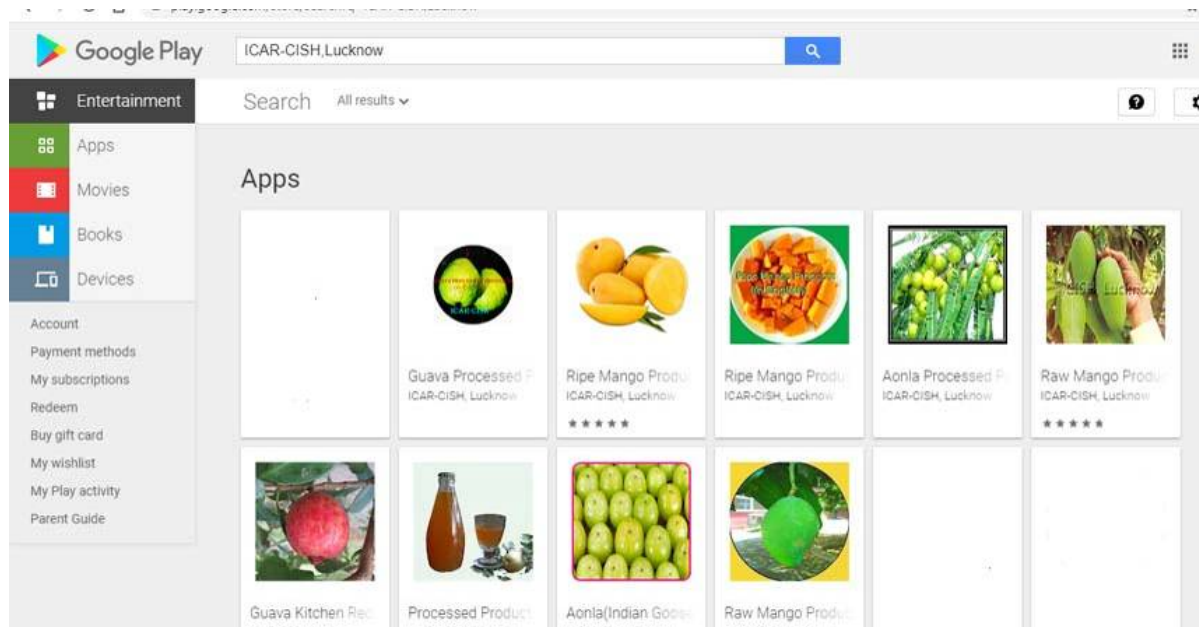
आंवला प्रसंस्कृत उत्पाद (हिन्दी) Aonla Processed Products (in Hindi):

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.Aonla_Processed_Products_Hindi&hl=en&gl=US

बेल के प्रसंस्कृत उत्पाद (द्विभाषी) Processed Products of Bael (Bilingual)

https://play.google.com/store/apps/details?id=appinventor.ai_harish70_patel.Bael_Processed_Products_English&hl=en_IN&gl=US

वैकल्पिक रूप से, प्रसंस्कृत फल उत्पादों पर संस्थान द्वारा विकसित सभी नौ मोबाइल ऐप को गुगल प्ले, कीवर्ड 'ICAR-CISH, Lucknow' के साथ खोज कर सूचीबद्ध किया जा सकता है जैसा कि नीचे स्नैपशॉट में दिखाया गया है। Alternatively, all nine mobile apps developed by CISH on processed fruit products can be listed by searching the 'GOOGLE PLAY' with keyword 'ICAR-CISH, Lucknow' as shown in snapshot below:



टिप्पणी Notes:

- एक रसायन को दोहराया नहीं जाना चाहिए। दोहराया गया छिड़काव वैकल्पिक उपलब्ध रसायन के साथ किया जाना चाहिए। ध्यान रखें कि खिले बौर पर कीट नाशक का छिड़काव न करें। Same chemical should not be repeated. Repeated spray should be done with alternate available chemical. Insecticides should not be sprayed at full bloom stage to save pollinators.
- किसानों को सलाह दी जाती है कि वह स्थानीय कृषि रसायन विक्रेताओं की सलाह पर कार्य न करने से बचें। Farmers should avoid to work on advisory from local pesticide sellers.

सूचना संबंधी संपर्क हेतु :-निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ से सम्पर्क करें।

For further information contact to: Director ICAR-CISH, Lucknow (0522-2841022, 0522-2841024)